Dr. Madan Paswan, History.

August 2020 (1)

Lecture No. 18.

Class :- B.A. Part-I (Hons. P-I + Sub.)

Date : 14.08.2020

Topic :- Unit-IV (IVth) - Rise of Regional Powers - Tripartite Struggle.

From Page no. 1-2.

त्रिपक्षीय संघर्ष

आठवीं शताब्दी में तीन शक्तिशाली राज्यों का उद्भव (प्रतिहार, पाल, राष्ट्रकूट) हुआ। यह सभी हर्ष की मृत्यु के उपरान्त उत्तरी भारत में हुई रिक्तता का लाभ उठाकर समृद्ध गंगाघाटी का स्वामित्व प्राप्त करना चाहते थे और इन तीनों में कन्नौज पर स्वामित्व के लिए त्रिदलीय संघर्ष प्रारम्भ होता है। यह संघर्ष 8वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से 10वीं सदी के पूर्वार्द्ध तक चलता रहा। यह संघर्ष अनेक चरणों में समाप्त हुआ।

8वीं शताब्दी के प्रारम्भ में कन्नौज पर नियंत्रण नितांत शक्तिहीन आयुध शासकों का शासन था। वे अपनी समकालीन पूर्वोक्त 3-3 महाशक्तियों की तुलना में इतने शक्तिहीन और अक्षम थे कि उनके सामने हर विजेता के सम्मुख नतमस्तक होने के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं था। इसके विपरीत पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट उनकी शक्तिहीनता का लाभ उठाकर कन्नौज पर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहते थे। इसके निम्नलिखित कारण थे :-

(1) इस त्रिपक्षीय संघर्ष का कारण कन्नौज नगर पर अधिकार करने की आकांक्षा मात्र नहीं था। कन्नौज वास्तव में इन तीनों महाशक्तियों की महत्वाकांक्षाओं का क्रीड़ास्थल था। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद कन्नौज का वही स्थान हो गया था जो लगभग मगध साम्राज्य के इतिहास में कभी पाटलीपुत्र का था। कन्नौज अब उत्तर भारत की राजनीतिक धुरी का प्रतीक था। अतः समकालीन राजनीतिक महाशक्तियों द्वारा कन्नौज पर प्रभुत्व स्थापित करने की लालसा बड़ी स्वाभाविक थी।

(2) हर्ष के समय से कन्नौज ने उत्तर भारत के एक प्रमुख नगर का जो स्थान ग्रहण कर लिया था। गंगा के तट पर स्थित होने के कारण नदी मार्ग से होने वाले व्यापार की दृष्टि से उत्तर एवं पूर्वी भारत के मध्य वह बहुत महत्वपूर्ण कड़ी था। कन्नौज का क्षेत्र गंगा और यमुना के मध्य स्थित होने के कारण भारत का सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्र था। इसके अतिरिक्त पालों, प्रतिहारों दोनों के लिए उपयुक्त क्षेत्र था, साथ ही राष्ट्रकूटों ने गुर्जर प्रतिहारों के प्रति अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए इस संघर्ष में सक्रिय रूप से हस्तक्षेप किया।

कन्नौज के लिए त्रि-पक्षीय संघर्ष :-

(क) 8वीं शताब्दी के मध्य में भारत के तीन कोनों में तीन शक्तिशाली राजवंशों का उदय हुआ। दक्षिण में राष्ट्रकूट, पूर्व में पाल, पश्चिम तथा उत्तरी भारत में गुर्जर-प्रतिहार।

(ख) कन्नौज पर आधिपत्य के लिए इन तीनों (पाल, पश्चिम, उत्तरी, पूर्वी व दक्षिणी प्रतिहार, राष्ट्रकूट) महाशक्तियों के मध्य हुए संघर्ष को

[Conti....]

त्रिपक्षीय संघर्ष कहा जाता है।

(ग) इस त्रि-पक्षीय संघर्ष को प्रतिहार नरेश वत्सराज ने प्रारम्भ किया। वत्सराज ने कन्नौज के आलुध्य शासक इन्द्रायुध को युद्ध में पराजित करके उत्तर भारत में अपनी सत्ता का विस्तार प्रारम्भ किया।

(घ) प्रतिहार गंगा-यमुना के संगम तक पहुँच गए थे और पालों (बंगाल के शासक) का प्रभाव प्रयाग तक बढ़ गया था।

(ङ) पाल नरेश धर्मपाल व प्रतिहार नरेश वत्सराज के मध्य उत्तर भारत पर आधिपत्य के लिए संघर्ष प्रारम्भ हो गया। राष्ट्रकूट नरेश ध्रुव ने इस संघर्ष में हस्तक्षेप किया व सर्वप्रथम वत्सराज को पराजित किया।

(च) त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लेकर उत्तर भारत की राजनीति में हस्तक्षेप करने वाले और दक्षिण में उत्तर पर दक्षिण से आक्रमण करने वाले 'राष्ट्रकूट' प्रथम शक्ति थे। तदुपरांत ध्रुव ने गंगा और यमुना के मध्य धर्मपाल को हराया। इन विजयों के बाद ध्रुव दक्षिण वापस लौट गया।

— Dr. Madan Paswan, Lecture no. 18 (History).
Date: 14.08.2020.